Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

भारतीय शिक्षा एवं समाज का ऐतिहासिक विकास

कैलाश डावर[1]

शोधार्थी, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र), प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातात्विक विभाग

सारांश

यहां शोध पत्र भारतीय शिक्षा प्रणाली और समाज के बीच के गहरे अंतर संबंधों का एक ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल की गुरुकुल परंपरा से लेकर मध्यकालीन मदरसा प्रणाली और आधुनिक काल की पश्चिमी शिक्षा पद्धति तक के सफर को इसमें रेखांकित किया गया है। यहां अध्ययन दर्शाता है, कि कैसे शिक्षा ने भारतीय समाज की संरचना जाति व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित किया है। और किस प्रकार सामाजिक परिवर्तनों ने समय-समय पर शैक्षणिक नीतियो को नया रूप दिया साथ ही यहां पत्र स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और वर्तमान डिजिटल युग में समाज की बदलती भूमिका की भी समीक्षा करता है।

कीवर्डस

भारतीय शिक्षा ऐतिहासिक विकास, गुरुकुल प्रणाली, सामाजिक परिवर्तन, औपनिवेशिक शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत, आधुनिक शिक्षा नीति।

GYAN MANTHAN A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इतिहास गवाह है, कि किसी भी समाज की उन्नति उसकी शिक्षा पद्धति में छिपी होती हैं। प्राचीन भारत के गुरुकुल से लेकर आधुनिक शैक्षिक संस्थानों तक शिक्षा ने न केवल ज्ञान दिया है बल्कि हमारे समाज के चरित्र को भी गड़ा है यहां अध्ययन दर्शाता है कि भारतीय शिक्षा केवल ज्ञान अपने अर्जन का साधन नहीं है। बल्कि हमारे समाज के चरित्र को गड़ा है। यहां अध्ययन दर्शाता है, कि भारतीय शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं है। बल्कि सामाजिक संरचना सांस्कृतिक मूल्य और ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतिबिंब रही है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति केवल साक्षरता तक सीमित नहीं थी बल्कि यहां व्यक्ति के सर्वांगीण विकास शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक स्तर पर आधारित थी। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य 'सा विद्या या विमुक्तय' अर्थात विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए। इसका उद्देश्य व्यक्ति को जन्म मरण के चक्र से मुक्त करना और आत्म साक्षात्कार करना था। प्राचीन काल कि शिक्षा का केंद्र गुरुकुल जो तक्षशिला ,नालंदा, विक्रमशिला विश्वविद्यालय यहां अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय थे जहां खगोल विज्ञान, गणित और औषधि विज्ञान,और दर्शनशास्त्र जिसे विषयों का उच्च शिक्षा दी जाती थी। मध्यकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली धार्मिक शिक्षा प्रणाली थी। जो गुरुकुल , मठ, और मंदिरों जहां संस्कृत ,धर्मशास्त्र, व्याकरण, तर्कशास्त्र और दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। जो हिंदू केंद्र थे शिक्षा थे और इस्लामी शिक्षा मकतबों में प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी और

मदरसो में उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। इन केंद्र में अरबी फारसी कुरान धर्मशास्त्र और न्याय शास्त्र पढ़ाया जाता था कई मदरसो म

मस्जिदों से जुड़े होते थे। जिन्हें शासको या राइसो द्वारा संरक्षण प्राप्त था। मध्यकालीन समय में फारसी राज्य कल की भाषा होने के कारण लोकप्रिय रही थी। मध्यकाल में अनेक विषय में शिक्षा शुरू हुई ,प्रशासन, भूगोल, इतिहास, जेसे विषय शामिल हुआ। चिकित्सा और शरीयत (कानून)की शिक्षा भी दी जाती थी। यहां मध्यकाल तक शिक्षा उच्च वर्ग तक सीमित और धनी परिवार को वर्चस्व रहा था। महिलाओं के लिए शिक्षा बहुत सीमित थी, हालांकि भक्ति और सूफी आंदोलन के दौरान कुछ महिला शिक्षित हुई थी। आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं ब्रिटिश संस्कृति भारत में शिक्षा के माध्यम से ब्रिटिश शिक्षा और पश्चिमी संस्कृतियों के प्रति रुचि पैदा करना था। और वफादार वर्ग का निर्माण करना था। 1835 के मेकले की शिक्षा नीति का उद्देश्य था,कि भारतीय वर्ग तैयार करना वफादारी से रक्त और रंग से भारतीय हो लेकिन पसंद विचार और बुद्धि से अंग्रेज हो पश्चिमी शिक्षा के साथ ही पश्चिमी सांस्कृतिकरण का भी प्रसार हुआ। ज्ञान विज्ञान और ईसाई धर्म का प्रसार शुरू हुआ, स्वतंत्रता के बाद शिक्षा आयोग राधा कृष्ण आयोग 1948 डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्ण विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार हुआ। कोठारी आयोग 1964, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्र शिक्षा नीति (NEP) 2020 मातृ भाषा में और बालकों का सर्वांगीण विकास व कोशल विकास करना। रटने के बजाय समझनें कि और प्रेरित है।

मुख्य बिंदु

- प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा प्रणाली का क्रमिक विकास आधुनिक काल तक विश्लेषण अध्ययन है, प्राचीन भारतीय इतिहास में शिक्षा प्राचीन गुरुकुल प्रणाली थी। यहां प्राचीन भारतीय शिक्षा की रीड थी। विद्यार्थियों अपने परिवार से दूर गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। और गुरु के परिवार का सदस्य माने जाते थे, बालोंको को प्राचीन काल में तक्षशिला विश्वविद्यालय और नालंदा विश्वविद्यालय तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय में जहां खोगल विज्ञान, गणित औषधि विज्ञान और दर्शनशास्त्र जिसे तार्किक विषय का अध्ययन करते थे। पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति मौखिक परंपरा रही थी। गुरु द्वारा वेदों और मंत्रों का उच्चारण शिष्य को सिखाया जाता था, और विद्यार्थी उन्हें कंठस्थ करते थे। विविध धार्मिक ग्रंथ थे वेद, उपनिषद और राजनीतिक के अलावा शिल्पवेद, धनुर्वेद विद्या राजनीति अर्थशास्त्र और भी व्यावसायिक शिक्षा दी जाती थी। यहां वर्ण आधारित शिक्षा पद्धति अक्सर वर्ण व्यवस्था से जुड़ी थी जिसमें ब्राह्मण को शास्त्रों और क्षत्रियों को युद्ध कौशल की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना होता था। गुरु शिष्य का संबंध परिवार सदस्य समान होता था गुरु केवल ज्ञान डाटा ही नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और आध्यात्मिक संरक्षक भी होता था। गुप्तकालीन शिक्षा व्यवस्था अपने चरम सीमा पर थी। इस दौरान सम्राट ने बौद्ध भिक्षु और शिक्षा केंद्र को गांव दान में दिए जिसे उच्च कोटि की शिक्षा का प्रसार हुआ प्राचीन काल में महिलाओं को भी विदुषी महिला द्वारा योगदान रहा है, जिन्होंने शिक्षा दी जहां नारी का सम्मान किया जाता है, वहां देवताओं का निवास रहता है। इस प्रकार की नारी को प्रतिपादित किया गया है। और महिला शिक्षित हुई जिस प्रकार बिना धूरी के पहिए और बिना तार के वीणा का कोई महत्व नहीं रह जाता है। वैसा ही बिना नारी के मानव जीवन व्यर्थ रह जाता है। विधिक साहित्य के अनुसार बालों को के सम्मान ही बालिकाओं को भी उपनयन संस्कार होता था जो

की शिक्षा के लिए होता था, ऋग्वेद काल में गार्गी मित्रेय, घोसा, विशावारा ,अपला ,अदिति ,लोपामुद्रा, सूर्या ,सावित्री आदि विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा केंद्र तक्षशिला विश्वविद्यालय पंजाब प्रांत में रावलपिंडी में है, वर्तमान में यहां पाकिस्तान सिंधु नदी के किनारे हैं, यहां दुनिया का पुराना विश्वविद्यालय में शेख था जो की छुट्टी शताब्दी से पूर्व में शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। इसको यूनेस्को विश्व धारोहर सूची में 1980 में शामिल कर लिया गया है यहां के छात्र चाणक्य और पाणिनि, जीवक जिसे प्रसिद्ध विद्वानों ने यहां शिक्षा प्राप्त की है, और शिक्षा दी भी हैं। यहां चिकित्सा राजनीति युद्ध कला व्याकरण सहित 64 से अधिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी यहां प्राचीन काल से गांधार जनपद की राजधानी रही थी तक्षशिला। नालंदा विश्वविद्यालय बिहार भारत में है जो की पटना राजधानी का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था नालंदा विश्वविद्यालय पांचवीं शताब्दी में गुप्त शासक कुमार गुप्ता प्रथम द्वारा 450 ईस्वी में निर्माण किया था यहां बोध्द शिक्षा का केंद्र था। यहां देश-विदेश चीन कोरिया जापान से विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे। और विश्वविद्यालय को 1193 ईस्वी में अफगानिस्तान तुर्क सेनापति कुतुबुद्दीन का एक सेनापति बख्तियार खिलजी द्वारा आक्रमण कर नष्ट कर दिया गया था और यहा के लाइब्रेरी ग्रंथों भी जला दी गई थी जो 6 मंथ तक जली थी।

- मध्यकालीन भारतीय शिक्षा पद्धति यहां शिक्षा प्रणाली केवल ज्ञान अर्जुन का साधन नहीं था, बल्कि धर्म संस्कृति और सामाजिक मूल्य का संरक्षण का एक प्रमुख स्तंभ था यहां धार्मिक केंद्रीय शिक्षा मध्यकाल में शिक्षा मुख्य रूप से धर्म पर आधारित हिंदुओं के लिए यहां वेदों और शास्त्र पर केंद्रित थी। जबकि मुसलमान के लिए कुरान और हदीस की शिक्षा अनिवार्य थी यहां चरित्र निर्माण का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को नैतिक और धार्मिक आध्यात्मिक विकास करना था जीवन में व्यावहारिक मूल्य और अनुशासन को अधिकतम महत्व दिया जाता था मुक्त अब मुस्लिम शिक्षा प्राथमिक केंद्र था जो कि अक्सर मस्जिदों से जुड़ा होता था, या बच्चों को पढ़ना लिखा ना और बुनियादी धार्मिक शिक्षा दी जाती थी, कश्मीर एक महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र था। इस काल में कश्मीर में अनेक पंत और ज्ञान का केंद्र थे, दक्षिण भारत में भी अनेक महत्वपूर्ण मठ स्थापित हुए थे। जिससे मदुरई और श्रृंगारी में यहां वाद विवाद धाम दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। इसके मध्य शिक्षा का बढ़ावा और फैला हुआ बहुत दूर-दूर तक फैला जैन और बौद्ध धर्म की भिक्षु का दामन भी करते थे। धार्मिक शिक्षा के कारण यहां बौद्ध धर्म की शिक्षा भारत तक सीमित रह गई और धार्मिक शिक्षा का विज्ञान के विकास की गति धीमी हो गई या कमजोर हो गई। उत्तर भारत में तंत्रवाद के विकास का वर्णन हो चुका था जो किसी भी जाती यहां व्यक्ति शामिल हो सकता था भक्ति आंदोलन बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म के दायरे में ले लिया गया इनके जातियों को लोगों को भी आकर्षित किया गया मदरसा और उच्च शिक्षा का केंद्र था, इस्लामी शिक्षा केंद्र था व्याकरण दर्शन गणित सरिया कानून जैसे विषयों का गाना ध्यान होता था। भारतीय राजभाषा भारत में मुगल सम्राट अकबर को जाता है 1582 में मुगल साम्राज्य की आधिकारिक भाषा घोषित की गई थी। यह 11वीं शताब्दी से गजनी वंश मोहम्मद गजनी द्वारा तुर्क के साथ भारत में आई फारसी भाषा और दिल्ली सल्तनत काल में 12वीं से 15वीं सदी तक रही राजकीय संरक्षण में मुगल शासको ने बड़े पुस्तकालय और मदरसों की स्थापना की थी।

- आधुनिक भारत में औपनिवेशिक शिक्षा पद्धति का विश्लेषण ब्रिटिश साम्राज्य के हितों और औपनिवेशिक साम्राज्य की नई बनाए रखने के लिए अंग्रेजो द्वारा पश्चिमी शिक्षा का अनुसरण किया गया था। अंग्रेजों ने भारत में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का विकास क्या, जिसका उद्देश्य भारत के समाज का कल्पना करना नहीं, बल्कि अपने शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षा दी गई थी। विपिन चंद्र के अनुसार ब्रिटिश प्रशासन ने शिक्षा को बाबू की फोज तैयार करना था। और जिससे ब्रिटिश प्रशासन चलाने के लिए सस्ते क्लर्क कब बाबू की पुर्ति हो सके और रंग और रक्त से भारतीय हो लेकिन पसंद विचार और बुद्धि से वहां अंग्रेज हो इस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी भारत में अंग्रेजों ने बेरोजगारों को भी शिक्षा दी और फौज में भर्ती कर लिया गया और 1835 लॉर्ड मेंकाले मिनट यहां भारत में शिक्षा अंग्रेजी शिक्षा लागू करना उन्हें लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1835 में अंग्रेज शिक्षा नीति लागू की और पश्चिमी ज्ञान का प्रसार होगा भारत में धीरे-धीरे विज्ञान तार का आधुनिक विचार हुआ वह डिस्प्ले 1854 भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। शिक्षा विभाग की स्थापना विश्वविद्यालय कोलकाता मुंबई मुद्रण की स्थापना हुई थी 1857 में प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा तक व्यवस्थित ढांचा बनाकर हंटर आयोग 1882 यहां प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया गया था। रेले आयोग 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम बना । वर्धा योजना 1927 महात्मा गांधी मातृभाषा में शिक्षा एवं बेसिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा अनिवार्य कहा था।
- डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयोग 1948-49 आधुनिक भारतीय उच्च शिक्षा कि नींव रखी। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बौद्धिक नैतिक और आध्यात्मिक विकास करना है बालकों में। शिक्षक ही राष्ट्र के निर्माता होता है उनका मुख्य कार्य छात्रों को सच की राह दिखाना है।
- कोठारी आयोग 1964 में तीन भाषा सूत्र मातृभाषा और हिंदी अंग्रेजी में शिक्षा का समावेश समानता और नैतिक राष्ट्रीयता एकता पर जोर दिया गया है।
- नई शिक्षा नीति जो कि (NEP) 2020 जो 34 साल पुरानी 1986 को चेंज कर 5+3+3+4 स्कुली शिक्षा में सुधार करते हुए बालोंको में समावेशी,कोशल, और व्यवसायिक शिक्षा का सर्वांगिण विकास करना देना रटने के बजाय समझनें कि और प्रेरित है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा और समाज का ऐतिहासिक विकास केवल प्रणालियों का परिवर्तन नहीं है, बल्कि भारतीय चेतना के क्रमिक विकास की यात्रा है, इस सामान्य और निरंतर भारतीय शिक्षा का इतिहास प्राचीन गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थियों का चरित्र विकास बौद्धिक विकास होता था, शारीरिक विकास होता था, गुरु शिष्य के समान सदस्य के रूप में शिक्षा दी जाती थी और धीरे-धीरे यहां अपने परिवार की ओर बढ़कर चल जाता था, गुरुकुल के बाद वहां अपना परिवार का भरण पसंद करता था शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा था, जो की मानसिक और शारीरिक और बौद्धिक विकास की ओर प्रेरित था धीरे-धीरे प्राचीन मध्यकालीन आधुनिक शिक्षा से हम ज्ञान प्राप्त कर आए हैं उनके सारे मध्यकाल से यहां बौद्ध जैन धर्म में शिक्षा बहुत उन्नतशिल शिक्षा केंद्र थे। उच्च शिक्षा मध्य कम लोगों तक सीमित था और स्त्री शिक्षा भी बहुत ना के बराबर थी लेकिन धीरे-धीरे शिक्षा का विस्तार खुला और आधुनिक काल में बने विश्वविद्यालय 1954 में वोट डिस्पैच भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया है तीन विश्वविद्यालय खोली गई थी। कोलकाता मुंबई मुद्रा सूरत धीरे-धीरे शिक्षा का विस्तार फैल गया और अंग्रेजों ने भारतीयों को

रंग रक्त से पहले ही भारतीय रखा लेकिन सोच विचार धीरे-धीरे पश्चिम के कारण खुलता गया। भारतीय में सोच विचार के आकार बड़ा और साथी क्रांतिकारी जन्म लेने लगी ब्रिटिश उपनिवेश द्वारा भारत में शिक्षा के लिए स्कूल खोले गए और कॉलेज खोले गए और आजाद भारत में और भी आयोग द्वारा मजबूत शिक्षा नीति बनाकर भारतीय को ऊंचाई तक ले गया।

संदर्भ

- सौरभ चौबे : प्राचीन भारतीय इतिहास
- सतिश चंद्र : मध्यकालीन इतिहास
- विपिन चन्द्र : आधुनिक भारतीय इतिहास
- भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (NEP) 2020 रिपोर्ट ।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL